

रक्षा उत्पादन में भारत की नई उड़ान

स्वदेशी उत्पादन है, तेजस लाइट कॉम्पैक्ट एयरक्राफ्ट, प्रलय और अग्नि मिसाइलें, अर्जुन टैंक, और एचएएल द्वारा विकसित हल्के हेलीकॉप्टर - यह सब उस आत्मनिर्भरता की झलक है जिसकी कल्पना दशकों से की जा रही थी। परंतु इस परिवर्तन की असली कसौटी अब है- क्या हम इसे स्थायी औद्योगिक क्षमता में बदल पा रहे हैं? वायु सेना दिवस का यह वर्ष इस मायने में खास है कि भारत ने रक्षा निर्यात में रिकॉर्ड बढत हासिल की है। वित्त वर्ष 2024-25 में भारत ने करीब रु. 21,000 करोड़ का रक्षा निर्यात किया, जो अब तक का सर्वोच्च आंकड़ा है। इससे स्पष्ट है कि भारत अब विश्व के टॉप 25 रक्षा निर्यातक देशों की सूची में अपनी जगह बनाने की दिशा में अग्रसर है।

इस सफलता के पीछे केवल सरकारी नीतियाँ नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र की सक्रिय

भागीदारी भी अहम है। टाटा, लार्सन एंड टुब्रो, महिंद्रा डिफेंस, और अदानी डिफेंस जैसे कंपनियों अब रक्षा विनिर्माण में ठोस योगदान दे रही हैं। सरकार ने डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में) स्थापित कर इस क्षेत्र में निवेश को नई गति दी है। इसके साथ ही, डिफेंस एक्सपो जैसे आयोजनों ने भारत को वैश्विक रक्षा बाजार में एक नए विश्वसनीय साझेदार के रूप में प्रस्तुत किया है। फिर भी चुनौतियाँ शेष हैं। अभी भी उन्नत जेट इंजन, रडार सिस्टम और उच्चस्तरीय इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों में हम विदेशी सहयोग पर निर्भर हैं। 'मेक इन इंडिया' की सच्ची सफलता तभी मानी जाएगी जब भारत अपने स्वदेशी इंजन, रडार और ड्रोन तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और निजी कंपनियों के बीच और गहरी

साझेदारी की आवश्यकता है।

इस वर्ष का वायु सेना दिवस हमें याद दिलाता है कि आसमान की यह ऊंचाई केवल पराक्रम से नहीं, बल्कि तकनीकी आत्मनिर्भरता से संभव होती है। हमारे सैनिकों के साहस को जितनी आवश्यकता हथियारों की है, उतनी ही उन हथियारों के पीछे के स्वदेशी ज्ञान, नवाचार और उद्योग नीति की भी है। मेक इन इंडिया रक्षा उत्पादन मॉडल अब केवल एक सरकारी अभियान नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता का आधार स्तंभ बन चुका है। यह वह चरण है जहाँ देश को 'डिजाइन इन इंडिया' की दिशा में भी कदम बढ़ाना होगा। क्योंकि आत्मनिर्भरता केवल निर्माण नहीं, बल्कि सृजन की भी प्रक्रिया है। वायु सेना दिवस 2025 इस आत्मनिर्भरता की उस उड़ान का प्रतीक है, जिसमें पंख भी अपने हैं और दिशा भी अपनी। अब यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि इस उड़ान को और ऊंचा, और स्थायी बनाया जाए - ताकि आने वाले समय में भारत का आसमान पूरी तरह स्वदेशी विश्वास से भरा हो।

जीएसटी की नई दरें किसानों के लिए वरदान



श्री शिवराज सिंह

किसान कल्याण केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। खेती सरल हो, उत्पादन की लागत घटे और किसान को अधिक मुनाफा हो, इसके लिए निरंतर प्रयास जारी हैं। अन्नदाताओं का जीवन बदलना और कृषि को विकसित बनाना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का लक्ष्य भी है और संकल्प भी। उनके निर्णयों, नीतियों और योजनाओं के केंद्र में हमेशा किसान रहते हैं। हाल ही में जीएसटी परिषद द्वारा किए गए संशोधन इसी किसानों हितैषी सोच को दर्शाते हैं। स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जीएसटी में नेक्स्ट जेनरेशन रिफॉर्म का जो संकल्प लिया था आज वह नए भारत की समृद्धि का आधार बन रहा है।

देश की आम जनता और किसानों के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए जीएसटी दरों में व्यापक सुधार किए गए हैं। यह सुधार हमारी कृषि व्यवस्था को गति और किसानों को प्रगति देने वाले हैं। इन सुधारों से देश के 10 करोड़ से अधिक सीमांत किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। पहले जहां कृषि उपकरणों पर 18% तक जीएसटी देना पड़ता

जैविक खेती और प्राकृतिक खेती के प्रति प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का विशेष बल रहता है। आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ कृषि की ओर बढ़ रही है, ऐसे में हमारे किसानों को सस्ते दामों पर जैव-कीटनाशकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए तब 12% से घटाकर 5% किया गया है। इससे किसान रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर रहने के बजाय धीरे-धीरे जैविक उर्वरकों की ओर बढ़ेंगे। मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी, धरती माँ का स्वास्थ्य सुधरेगा और साथ ही किसानों की लागत भी कम होगी। हमारे देश के किसानों की जोत का आकार छोटा है इसलिए हम इंटीग्रेटेडफार्मिंग और कृषि संबद्ध क्षेत्रों को प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि किसानों की आय तेजी से बढ़े।

था, अब यह दर घटाकर केवल 5% कर दी गई है। इसका मतलब है कि हर किसान की जेब में हजारों रुपये की सीधी बचत होगी।

उदाहरण के लिए, अगर कोई किसान 35 हॉर्सपावर का ट्रैक्टर खरीदता था तो पहले उसे लगभग 6.5 लाख रुपये (अनुमानित) खर्च करने पड़ते थे। अब यही ट्रैक्टर करीब 6.09 लाख रुपये में मिलेगा और किसान को लगभग 41 हजार रुपये की बचत होगी। 45 एचपी ट्रैक्टर पर करीब 45 लाख रुपये और 50एचपी ट्रैक्टर पर 53 हजार रुपये की सीधी बचत होगी। 75 एचपी ट्रैक्टर पर किसानों को लगभग 63 हजार रुपये का लाभ होगा। सिर्फ ट्रैक्टर ही नहीं, पावर टिलर पर करीब 12 हजार, धान रोपण यंत्र पर 15 हजार और श्रेशर पर लगभग 14 हजार रुपये की

बचत होगी। पावर वीडर और सीड-ड्रिल जैसे उपकरणों पर भी 5 से 10 हजार रुपये तक की बचत होगी। नए सुधारों से कटाई और बुवाई की बड़ी मशीनें भी किसानों को सस्ते दरों पर उपलब्ध हो सकेंगीं। 14 फीट कटर बार पर लगभग 1.87 लाख रुपये, स्क्रायबेलेर पर लगभग 94 हजार रुपये और स्ट्रॉरीपर पर करीब 22 हजार रुपये किसानों की जेब में बचेंगे। मल्टीपर, सुपरसीडर, हैपपीसीडर और स्प्रेंयर भी अब पहले से सस्ते हो गए हैं।

कृषि को अधिक लाभदायक बनाने के लिए मशीनीकरण आवश्यक है। मिक्सकलर, ड्रिपइरिगेशन, कटाई मशीन, हाइड्रोलिकपंप और कलपुर्जों पर टैक्स घटने से अब सीमांत किसान भी आसानी से आधुनिक उपकरण खरीद पाएंगे। इससे श्रम लागत कम होगी,

समय बचेगा और उत्पादकता बढ़ेगी। खेती के खर्च में कमी आने से स्वाभाविक रूप से किसान की आमदनी में वृद्धि होगी। ये अनुमानित कीमतें हैं। कंपनियों और राज्यों की नीतियों के आधार पर थोड़ी-बहुत भिन्नता संभव है, लेकिन यह तय है कि किसानों की लागत घटेगी और फायदा निश्चित मिलेगा।

हमारा हर कदम किसानों की समृद्धि के लिए है। किसानों को घटी हुई दरों का लाभ तुरंत मिले, इसके लिए मैंने कृषि मशीन निर्माताओं के संघों के प्रतिनिधियों के साथ भी बैठक की। यह सुधार केवल किसानों के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश को आर्थिक संपन्नता और आत्मनिर्भरता के लिए अभिन्नदनीय कदम है। कृषि की लागत घटने से किसान अपनी उपज से अधिक लाभ कमा पाएंगे जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि होगी। इसका सकारात्मक असर लघु और कुटीर उद्योगों पर भी पड़ेगा, क्योंकि उच्च कच्चा माल सस्ते में उपलब्ध होगा और उत्पादन लागत घटेगी। साथ ही एमएसएमई क्षेत्रों को भी बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। कृषि और पशुपालन

अपने-दूसरे के पूरक हैं। मधुमक्खी पालन, डेयरी, पशुपालन और सहकारी समितियों को तब तक जो छूट दी गई है, उससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई समृद्धि आएगी।

(लेखक भारत सरकार में कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री हैं)

ग्यालियर चंबल डायरी

संघ के कार्यक्रम में जाते ही लगे रुस्तम की घर वापसी के कयास



हरीश दुबे

इस सदी के शुरुआती दशक में चंबल की राजनीति में बड़ा चेहरा रहे रुस्तम सिंह के एक बार फिर भाजपा में शामिल होने की चर्चाएं राजनीतिक वीथिकाओं में सरगम हैं। हालांकि पहले भी उनकी घर वापसी के कयास लगे रहे हैं लेकिन ताजा अटकलों ने तब जोर पकड़ा जब वे संघ के शताब्दी वर्ष पर आयोजित पथ संकलन के बाद बौद्धिक कार्यक्रम में अपने पुत्र राकेश सिंह के साथ शामिल हुए। पिता पुत्र लगभग एक घंटे तक सामान्य अतिथि की तरह संघ कार्यक्रमों तथा गणमान्य नागरिकों के बीच मौजूद रहे। हालांकि कुछ लोग इसे पूर्व मंत्री का व्यक्तिगत मामला बता रहे हैं लेकिन कांग्रेस की तरफ से प्रतिक्रिया आई है कि रुस्तम सिंह और उनके बेटे यदि भाजपा में लौटते हैं तो इसमें कोई अचरज वाली बात नहीं है क्योंकि भाजपा रुस्तम सिंह का पुराना घर है। कांग्रेस यह भी मानती है कि रुस्तम व उनके पुत्र राकेश सिंह के भाजपा में रहने अथवा न रहने से राजनीतिक रूप से कुछ खास प्रभावित नहीं होगा। रुस्तम सिंह तत्कालीन भाजपा सरकार में वजनदार महकमों के कैबिनेट मंत्री रहे हैं लेकिन बाद में सत्तारूढ़

दल से उनकी पटरी नहीं बैठी। पुलिस के आईजी जैसी सुविधाजनक नौकरी छोड़कर अनिश्चित भविष्य वाले सियासत के सफर पर चलने वाले रुस्तम सिंह की गुर्जर समाज में पेट को उनके विरोधी भी कबूलते हैं, हालांकि उनकी चुनावी ट्रैक रिकॉर्ड में पराजय भी दर्ज हैं।

निशाने पर आ गए अनिल मिश्रा

हाईकोर्ट बार के अध्यक्ष रह चुके सीनियर

अब सिंधिया के खिलाफ बोलने लगे स्वामी

स्वामी आनंद स्वरूप अभी तक आरक्षण, अंबेडकर एवं सर्वांग सोच से जुड़ी बेबाक टिप्पणियों को लेकर विवादों में रहते थे, कई दलित संगठन उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग भी प्रशासन से कर चुके हैं लेकिन स्वामी ने अब सीधे तौर पर सिंधिया के ही खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। ग्यालियर में बन रहे अंबेडकर धाम के लिए तेरह करोड़ और मंजूर किए जाने पर स्वामी ने सिर्फ नाराज हैं बल्कि बहुत तीखे शब्दों में सिंधिया के खिलाफ सोशल मीडिया पर टिप्पणी की है। सिंधिया के अनुयायियों का नाराज होना स्वाभाविक था। सिंधिया समर्थकों की ओर से बाल खांडे ने पलटवार करते हुए न सिर्फ यह कहा है कि स्वयं को स्वामी बताते वाले व्यक्ति के मुंह से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते हैं बल्कि यह भी चेतावनी दी है कि फिर ऐसे बयान आए तो करारा जवाब मिलेगा।

निशानेबाज

कैसी दुविधा! गायब हुआ आनंद का शिधा

महाराष्ट्र की जनता इस बार दिवाली का आनंद नहीं ले पाएगी, क्योंकि सरकार ने आनंद का शिधा (राशन) नहीं देने का फैसला किया है। इसके पहले सिर्फ 100 रुपए में त्योहार पर आनंद का राशन उपलब्ध कराया जाता था, जिसमें खाद्य तेल, चना दाल और शाकर का एक-एक किलो का पैकेट किट के रूप में राशन काई धारकों को दिया जाता था। अब मुझ यह है कि जनता आनंदित कैसे होगी? एक समय था, जब कहा जाता था- आनंदी आनंद गडे, इकडे तिकडे चोहीकडे! मुंबई में आनंद की कमी इसलिए नहीं थी, क्योंकि तब वहां देव आनंद, विजय आनंद और चेतन आनंद थे, किन्तु ही लोग अपने बेटे का नाम आनंदराव या आनंदकुमार रखा करते थे, बेटे का नाम आनंदीबाई रखा जाता था ताकि वह हमेशा आनंदित रहे, वैसे आनंद की उपज मन से होती है, छोटी छोटी खुशियां मन को आनंदानुभूति देती हैं, बड़े-बड़े उद्योगपतियों को व्यवसाय की चिंता में नींद नहीं आती जबकि कम पढ़े-लिखे गरीब भी अपनी झोपड़ी में आनंदित रहते हैं और दिन भर परिश्रम के बाद आनंद से टूटी खाट पर आनंद की नींद लेते हैं। साधु-संन्यासियों को भजन में आनंद आता है, तो नेताओं को राजनीतिक उखाड़-पछड़ करने, आंदोलन करवाने में आल्लाह या आनंद



महसूस होता है। कभी-कभी उनके हवा-हवाई वादे भी जनता को आनंदित कर देते हैं, एक ऐसा ही वादा था- हमारी सरकार बनने पर विदेश से काला धन लाकर हर देशवासी के खाते में 10 लाख रुपये जमा करा दिए जाएंगे, यह सुनते ही मतदाता आनंदमन हो गए और नेता व उसकी पार्टी को बहुमत से जिता दिया। बाद में उस वादे की याद दिलाते पर कहा गया कि वह तो चुनावी जुमला था। भोली-भाली जनता को आनंदित करने के लिए जुमला या फूलों का गमला पर्याप्त है, आनंद के लिए अंग्रेजी में लेंजर, ब्रिस् या हैपीनेस जैसे शब्द हैं।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12045												
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37
29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41

बाएं से दाएं

1. राजा उग्रसेन का पुत्र जिसका वध कृष्ण ने किया था 3. चाण नदी का किनारा, तट 4. सावन के बाद और कुंवार के पहले का महीना, भाद्रपद 5. निवास, रहना 7. मुद्रण, किसी उभरे हुए या खुदे हुए तप के चिन्ह 9. जगमगाना, प्रकाशित होना 13. शताब्दी, सैकड़ (उर्दू) 15. लंगन, गाने की तर्ज 16. पृथ्वी 17. मवेशी, चोपाया 19. बोध, जानना 21. व्यायाम, बहुलता (उर्दू) 25. लिखने वाला, लेखक 27. अभिनेता, एक जाति 28. रज, गर्द 29. कष्ट, पीड़ा 30. बोना, लगाना

Solution 12044

प	श	ह	र	अ	ध	क
दा	ज	वा	न	बा	श	दा
श	भु	त	ल	क्र	दी	श
स	भा	प	न	स	श	दा
स	र	प	ट	प्र	क्र	ट
ह	स	क्र	ब	घ	ना	श
ह	रे	त	र	ल	ख	म
रू	ख	र	ना	न	सी	ब

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनावश्यक वाद विवाद होगा। मन में तनाव रह सकता है, व्यर्थ चिन्ताओं से कार्य में व्यवधान आयेगा, व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी, आकस्मिक क्रोध की स्थिति बन सकती है। शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है, वर्ष के अन्त में नये स्रोतों में वृद्धि होगी, रुके कार्यों में गति आयेगी, धार्मिक कार्यों में व्यय होगा।

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आय के नवीन स्रोतों में वृद्धि होगी।

मेघ- उच्च अध्ययन पर विचार होगा, धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी, जमीन जायजद प्राप्त होगी आदि के कार्यों में सफलता मिलेगी, सुख शांति में वृद्धि होगी।

वृषभ- बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, आर्थिकी वर्ग प्रसन्न रहेगा, व्यापारिक क्षेत्र में अत्याधिक विश्वास न करें, खरीदी विक्री के कार्यों में व्यस्त रहेंगे।

मिथुन- साझेदारी में बड़ी योजना शुरू कर सकते हैं, पुराने मित्रों से भेंटवार्ता होगी, आर्थिक मदद मिलेगी, परिश्रम अधिक करना होगा।

कर्क- कुछ लोग आपको अंधेरे में रखकर नुकसान पहुंचा सकते हैं, अधिकांशकार्य से मदद मिलेगी, नवीन योजनाओं में संलग्नता रहेगी।

सिंह- कानूनी मामलों में सावधानी से निर्णय लेने की जरूरत है, गश्ततबाजी से बचना चाहिए, मित्र वर्ग मदद करेंगे, व्यर्थ वाद विवाद से बचें।

कन्या- बने बनाये कार्यों में अचानक व्यवधान आ सकता है, मित्रों का सहयोग रहेगा, नवीन योजना बननी, दिन के उत्तरार्ध में कष्ट हो सकता है।

तुला- आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी, जोखिम के कार्यों में रुचि रहेगी, व्यापार में उन्नति का योग है, यश प्राप्त होगा, मित्र मिलन होगा।

वृश्चिक- बीती बातों को याद करके निजी संबंध में कटुता बढ़ेगी, लाभदायक अवसर मिलेगा, नये कार्य को जहां तक बने टालना हितकर रहेगा।

धनु- अटका धन मिलने के आसार हैं, सामाजिक प्रशिक्षण, मान सम्मान व यश मिलेगा, अनावश्यक विवादों को टालें, विग्रह में वृद्धि होगी।

मकर- सफलता के लिये कार्यों में गति बढ़ावें, जमीन जायजद के कार्यों में सफलता मिलेगी, मित्रों का सहयोग रहेगा, अतिथि आगमन का योग है।

कुम्भ- मित्रों की मदद से बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, रुका धन प्राप्त होगा, निजी पुरूषार्थ बढ़ेगा।

मीन- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, आपकी बुद्धिमानी एवं सुझाव से शत्रुवर्गी परास्त होगा, कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, यात्रा एवं लाभ मिलेगा।

उदयकालीन ग्रह वाल

9	8	के.7 मू.	6	5
		च.मू.		
10			4	
11	12	1	2	3

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण तृतीया गुरुवासरे रात 2/49, भरणी नक्षत्र रात 12/32, वज्र योगे रात 2/47, वणिज करण सू.उ. 6/12, सू.अ. 5/48, चन्द्रचार मेष रातअंत 6/6 से वृषभ, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 1 2 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार मतिष्य

कार्तिक कृष्ण तृतीया को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से पीली, काली, रंग की वस्तुओं का जोरदार उछाल आयेगा, किन्तु आज के बने भाव घटेंगे, सफेद रंग की वस्तुओं का समावेश होगा। व्यापारी वर्ग बाजार का रूख देखकर कार्य करें, भागांक 2694 है।

SUDOKU 7177

			6	8	5			
1								2
	2							8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
8								6
	4	9	1					

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें। पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। पहले की का केवल एक ही हल है।

नवभारत सू-दोखू 7176

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7